**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 7 Issue 8, August 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# नगरीकरण की अवधारणा की समीक्षा

डॉ.हरिचरण मीना, व्याख्याता
समाज"ाास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सवाईमाधोपुर

शोध सारां"ाः–

ग्रामीण क्षेत्र से नगरीय क्षेत्रों की ओर जनसंख्या के पहुंचने और नगरों में आकर बसने को नगरीकरण कहा जाता है। इसकी एक बड़ी विशेषता यह है कि नगरीय केन्द्रों की ओर जनसंख्या के तेजी से उमड़ने के कारण नगरों की जनसंख्या सघन हो जाती है। अधिकतर मामलों में नगरीय बसावट के बढ़ जाने के कारण नगर की सीमाय भी निर्धारित नहीं की जा सकती। इसका अर्थ यह है कि हम नगर की सीमाओं में नगर को आबद्ध करने के बाद उसे ग्रामीण क्षेत्र से एकदम अलग नहीं कर सकते। नगर को कुछ खास तरह के परिवर्तनों से पहचाना जा सकता है। जैसे– जनसंख्या का घनत्व, विशेष प्रकार के आवास स्थल, वाणिज्यिक इमारतें तथा एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये यातायात के साधनों की सुविधाए । यद्यपि यह सभी चीजें प्रायः नगरीय तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में मिल जाती हैं, परन्तु नगरों में अपेक्षाकृत इन सुविधाओं की बहुतायत होती है। उदाहरण के लिये संयुक्त राज्य अमेरिका में ग्रामीण क्षेत्रों में सुव्यवस्थित सड़कें हैं तथा सभी प्रकार की मूलभूत सुविधायें भी उपलब्ध हैं, फिर भी यदि आप न्यूयॉर्क अथवा शिकागो जैसे शहर में जाये तो आप पायेंगे कि इन सुविधाओं का स्तर इन नगरों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बहुत ऊंचा है। कुछ देशों में तो नगरीय तथा ग्रामीण जीवन में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। यह नगरीकरण के विस्तार पर निर्भर करता है, फिर भी नगरीय क्षेत्र की एक स्पष्ट पहचान यह है कि यहां की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग गैर कृषि कार्यों में लगा होता है। जबकि गांवों म जादातर लोग खेती संबंधी कार्यों में लगे होते हैं। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि अधिक होती है क्योंकि नगरीय क्षेत्रों में आबादी लगातार बढ़तो रहती है। अतः नगरीय क्षेत्रों का लगातार विस्तार होते रहना स्वाभाविक है।

प्रस्तावनाः–

ग्रामीण क्षेत्र से नगरीय क्षेत्रों की ओर जनसंख्या के पहुंचने और नगरों में आकर बसने को नगरीकरण कहा जाता है। इसकी एक बड़ी विशेषता यह है कि नगरीय केन्द्रों की ओर जनसंख्या के तेजी से उमड़ने के कारण नगरों की जनसंख्या सघन हो जाती है। अधिकतर मामलों में नगरीय बसावट के बढ़ जाने के कारण नगर की सीमायें भी निर्धारित नहीं की जा सकती। इसका अर्थ यह है कि हम नगर की सीमाओं में नगर को आबद्ध करने के बाद उसे ग्रामीण क्षेत्र से एकदम अलग नहीं कर सकते। नगर को कुछ खास तरह के परिवर्तनों से पहचाना जा सकता है। जैसे– जनसंख्या का घनत्व, विशेष प्रकार के आवास स्थल, वाणिज्यिक इमारतें तथा एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये यातायात के साधनों की सुविधाए । इसे शहरी फैलाव कहा जाता है। नगर की जनसंख्या बड़े–बड़े भू क्षेत्रों पर फैल जाती है जिसके कारण नगरों के बाहरी भागों मे उपनगर विकसित हो जाते हैं। इससे नये आवास स्थलों का निर्माण, सड़कों का निर्माण, यातायात के साधनों की उपलब्धि आवश्यक हो जाती है। इस प्रकार नगरीय क्षेत्र का विस्तार सुनिश्चित हो जाता हैं। इस विस्तार के कारण नगर की बसावट में नगर के आस–पास पड़ी कृषि भूमि तथा गैर उपजाऊ भूमि भी शामिल हो जाती है।

हम जानते हैं कि नगरों का निर्माण ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले लोगों के नगरों में बसने के कारण होता है। परन्तु हम यह विचार करे कि ग्रामीण आबादी का नगरीय क्षेत्र की ओर निरंतर पलायन के कारण क्या है एक कारण यह भी हो सकता है कि ग्रामीण लोगों के बीच मारामारी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और वह साथ–साथ नहीं रह पाते, निरंतर दबावों के कारण कुछ लोग गांव छोड़ने पर विवश हो जाते हैं और ऐसी जगह जाकर रहना चाहते हैं जहां उन्हें ऐसे अनावश्यक दबावों का सामना न करना पड़े।

रोजगार की कमी तथा आर्थिक गतिविधियों का अभाव ग्रामीण वातावरण को असहनीय बना देता है, ऊपर से प्राकृतिक आपदायें, जैसे भुखमरी, सूखा, गरीबी, बाढ़ तथा राजनैतिक उत्पीड़न भी गांव के लोगों को गांवों से उखाड़ने का काम करते हैं। जो लोग गांवा में सुविधापूर्वक रहने के अवसर नहीं पाते वे अच्छे जीवन की तलाश में नगरों की ओर पलायन कर जाते हैं। उन्हें उम्मीद होती है कि नगरों में उन्हें काम मिलेगा और

बिना किसी झंझट के जीवन जीने के अवसर मिलेंगे तथा वे एक दिन मेहनत और विकास करते करते वे समृद्ध हा जायेंगे।

दूसरी ओर नगरों का अपना एक आकर्षण होता है नगरों की चमक–दमक ग्रामीण लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है और वे गांव छोड़कर नगरों में जाकर बस जाने की कल्पना करने लगते हैं। नगरीय क्षेत्रों में आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक वातावरण ग्रामीण लोगों को अपनी ओर खींचता हैं। क्योंकि इस वातावरण में विकास की अधिक संभावनायें रहती हैं।

उदाहरण के लिये नगरीय क्षेत्रों में अनेक प्रकार के औद्योगिक केन्द्र तथा कल कारखाने होते हैं जो बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार देने की क्षमता रखते हैं इसलिए लोग गांव छोड़कर शहर की ओर भागते हैं। जो व्यक्ति शहरों में अच्छा रोजगार पा जाता है उसकी आमदनी का स्तर बढ़ जाता है उसे शहर बहुत अच्छा लगने लगता है। यद्यपि मूलतः नगरीकरण का अर्थ ग्रामीण आबादी का नगरों की ओर पलायन है परन्तु लोगों के नगरों में आकर बसने के अपने–अपने कारण होते हैं।

## नगरवाद एवं उत्संस्करण

यदि नगरीकरण एक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत नगरीय क्षेत्र का विकास होता है तो नगरवाद नगरों का होना या बसना होता है। इसके अंतर्गत वे सभी भौतिक तथा सामाजिक पारस्परिक व्यवहार आते हैं जो नगरीय केंद्रों में होते हैं। यह सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक शक्तियां तथा प्रक्रियाएं हैं जो नगरीय केंद्रों पर देखी जा सकती हैं। नगरवाद जीवन उन तरीकों की गहरी समझ प्रदान करता है जो नगरों में अपनाए जाते हैं। इसे और बेहतर ढंग से इस प्रकार समझ सकते हैं।

जब कोई व्यक्ति गांव छोड़कर शहर में बसने के लिए जाता है, उसे दोनों क्षेत्रों की संस्कृतियों में अंतर का आभास होता है। कुछ अंतर स्पष्ट होते हैं, कुछ सूक्ष्म या आभासी होते हैं। ये अंतर भोजन करने के तरीकों, भोजन के चयन, कपड़े पहनने के ढंग, व्यावसायिक गतिविधियों तथा सोचने के तरोकों में भी देखे जा सकते हैं। उदारहण के लिए एक ग्रामीण वातावरण में लोग जल्दी सोते हैं और जल्दी उठते हैं। बेंगलौर जैसे शहरों, लॉस एंजिल्स तथा बर्सीलोना जैसे महानगरों में लोग रात–रात भर जागकर मस्ती करते हैं। नगर में आने के बाद गांव के व्यक्ति को अनेक प्रकार की विसंगतियों तथा

टकरावों का सामना करना पड़ सकता है। जिस वातावरण में वह व्यक्ति पला–बढ़ा था और जिसमें आकर अब बस गया है उनकी संस्कृतियों और जीवन–शैलियों में बहुत अंतर होते हैं। धीरे–धीरे उसे इस सब की आदत पड़ जाती है कि शहर के लोग कैसे कपड़े पहनते हैं, कैसे सोचते हैं, कैसे काम करते हैं और कैसे एक दूसरे से मिलते हैं और संपर्क करते हैं। जैसे–जैसे उसे जानकारी होती जाती है, वह नयी चीजें अपनाता जाता है। यह सब जागरूकता के साथ भी किया जा सकता है और अनजाने भी घटित होता रह सकता है। कुछ दिनों बाद वह अपनी नई जीवन–शैली के तौर–तरीके सीख जाता है, कुछ नयी–नयी आदतें उसमें प्रवेश कर जाती हैं और कुछ पुरानी आदतें छूट जाती हैं। इस प्रक्रिया की उत्संस्करण कहते हैं बाहरी संस्कृति के कुछ लक्षणों का अपने आप में समावेश कर लेना। उत्संस्करण से न केवल उन लोगों के प्रति अपनेपन का भाव उत्पन्न हो जाता है जो गांव से आकर शहर में रहने लगते हैं, अपितु गांव से आकर शहर में बसने वालों को शहरी जीवन को प्रभावी ढंग से जीने की आदत पड़ जाती है। उदाहरण के लिए किसी नये स्थान की संस्कृति के बारे में जानकारी हो जाने से आप अपने पड़ोसियों के साथ बातचीत कर सकते हैं और घुल–मिलकर रहना सीख सकते हैं। नगर की यातायात प्रणाली की सही जानकारी एक जगह से दूसरी जगह जाने में समय और पैसे की बचत भी की जा सकती है। किसी स्थान के सांस्कृतिक परिवेश के साथ घुल–मिल जाने से उपरिक्षित क्षेत्र में भी दिशा–निर्देश प्राप्त हो सकता है। जब आप स्कूल से विश्वविद्यालय स्तर के शिक्षण संस्थानों में पहुंचते हैं तब आपको सांस्कृतिक परिवर्तन का अहसास होता है। नगरवाद तथा मनुष्यों पर उसके पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन को नगरीय समाजशास्त्र में व्यापक रूप से शामिल कर लिया है।

नगरवाद पर अनेक सर्वेक्षण हुए हैं। लुइस वर्थ ने नगरवाद जीवन की एक शैली के रूप पर महत्वपूर्ण शोध किया था, जिसमें उन लोगों के जीवन में जीवन शैलियों, आदतों, सम्पर्क शैलियों तथा सोचने के तरीकों में नगर में आने के बाद किस तरह परिवर्तन आ जाता है,

यद्यपि शहरी जीवन सामाजिक सम्पर्कों की अनन्त संभावनायें लेकर आता है, लेकिन वर्थ ने अपने शोध के माध्यम से हमें यह बताया है कि गांवों से नगर में आने पर व्यक्ति को किस तरह के अंतर्विरोधों का सामना करना पड़ता है। नगरों में लोग प्रायः बन्द घरों में रहते हैं, अकेले और अलग रहने से सामाजिक सम्पर्कों से कट जाते हैं और

वे अकेलापन, उपेक्षा और अवसाद का अनुभव करने लगते हैं। अब जरा इस बात पर भी विचार करो यदि तुम नगर में निवास करते हो और कभी तुम्हें गांव जाना पड़ता है तो तुम्हें कैसा लगेगा? क्या तुम अत्यधिक निश्चिंतता का अनुभव करोगे, तुम ऐसा क्यों सोचते हो?

## नगरीकरण की चुनौतियां

नगरीय क्षेत्र घने बसे होते हैं, विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमियों वाले लोग नगरों के सीमित क्षेत्रों में रहते हैं। यद्यपि नगरों में उन्नति और समृद्धि की संभावनायें निहित होती हैं। लेकिन नगरीकरण की प्रक्रिया अनेक प्रकार की चुनौतियों से भरी होती है। इस प्रक्रिया के माध्यम से नगरी क्षेत्र का स्वरूप बदल जाता है। वहां लोगों की संख्या बढ़ जाती है और परस्पर लेन–देन भी बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप क्षेत्र में मौजूद संसाधन कम पड़ने लगते ह और उनकी मांग बढ़ने लगती है जैसे जीवन के अवसर, रहने की जगह, सार्वजनिक सेवायें जैसे यातायात, स्वास्थ्य केंद्र, वायु, जल, रोजगार इत्यादि। क्योंकि नगरीकरण की प्रक्रिया जैविक होती है, अनियोजित होती है और उसमें निरंतरता बनी रहती है। इसके कारण कभी–कभी नगरों में स्थिति बिगड़ जाती है। चीजें अनियंत्रित हो जाती हैं, प्रशासन लगातार बढ़ते जाने वाले शहरीकरण के कारण लोगों की बढ़ती मांगों की पूर्ति निरंतर नहीं कर पाता। यह ठीक है कि नगरीकरण एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन तीव्र गति से होने वाले नगरीकरण के कारण नागरिकों की संसाधनों की मांग इतनी बढ़ जाती है कि सरकार उसकी पूर्ति नहीं कर पाती, तब नगरीकरण एक मुसीबत लगने लग जाता है। ऐसी स्थितियों में शहरों में गरीबी बढ़ जाती है, अवैध निर्माण होने लगते हैं, गन्दी बस्तियां तेजी से बढ़ने लगती हैं, यहां वहां गन्दगी के ढेर दिखाई पड़ने लगते हैं, इससे नगरों में प्रदूषण बढ़ जाता है और यह लोगों के स्वास्थ्य के लिये बहुत ही हानिकारक होता है। यद्यपि इन सभी समस्याओं को समुचित नियोजन द्वारा सुलझाया जा सकता है अब अनेक देशों ने नगरों के नियोजित विकास का फैसला ले लिया है और वे नगरीकरण के ऐसे प्रतिमानों को अपना रहे हैं जो स्थायी रूप से सफलतापूर्वक साधे जा सकते हैं

अनियोजित नगरीकरण का दूसरा बड़ा नुकसान यह है कि इससे नगर के लोगों में मतभेद और विरोध उत्पन्न हो जाते हैं। इन विरोधों के कारण नगर वहां रहने वाले

लोगो के लिये प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न करते हैं। पिछले खंड में हमने उत्संस्करण के बारे में पढ़ा, यदि नगरों की स्थिति अच्छी नहीं है तो वहां उत्संस्करण की प्रक्रिया कठिन हो जाती है। नगरों में रहने वाले लोगों के बीच ऐसे मतभेद उत्पन्न हो जाते हैं कि उन्हें एक–दूसरे के साथ घुल–मिलकर रहना मुश्किल हो जाता है। इससे नगरीय क्षेत्रों में अपराधियों का बोलबाला हो जाता है। अपराधी मनोवृत्तियों के लोग शहरों की जमीन पर अपने घर बनाने लगाते हैं। अपराधी मनोवृत्ति के लोग आपस में हाथ मिला लेते हैं, उनकी संस्कृति, भाषा, पृष्ठभूमियां तथा नृजातिय पहचान उन्हें एक–दूसरे के करीब ले आती है।

## भारत में नगरीय अध्ययन

भारत में नगरीय अध्ययन का आरंभ आजादी के बाद भारत के प्रशासकों तथा नगर–नियोजकों द्वारा हुआ जिन्होंने ब्रिटिश शासन काल के दौरान उत्पन्न हुई नगरीय समस्या के समाधान निकाले। भारत के अग्रणी नगर योजनाकारों में सबसे प्रमुख नाम पेट्रिक गेडेस का है। पेट्रिक गेडेस को लार्ड मद्रास के तत्कालीन गवर्नर लार्ड पेंटलेंड ने उनकी शैक्षिक योजनाओ को भारत में लागू करवाने के लिए भारत बुलाया था। 1915 में उनके भारत में आने के बाद से ही अगले 10 वर्षों तक गेडेस ने भारत के नगरों की दशा को समझने के लिए व्यापक रूप से सर्वेक्षण करवाए। इसके बाद उसने अपनी नगर–योजना की रिपोर्ट सौंपी जिसमें भारतीय नगरों के सुनियोजित विकास का खाका तैयार किया गया था। इस रिपोर्ट में भारतीय नगरों को अधिक सक्षम बनाने की सिफारिश की गई थी तथा तरीके सुझाये गये थे। गेडेस ने लापरवाही से बनाई गई नगर विकास योजनाओं, स्वच्छता संबंधी कुप्रबंधन, गंदी बस्तियों को बसने देने, संक्रमण जन्य रोगों को फैलने से रोकने के साधनों की कमी, कमजोर सीवरज व्यवस्थाओ तथा लोगों के सांस्कृतिक मूल्यो को सुरक्षित न रखपाने संबंधी विवशताओं के लिए तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासन की आलोचना की थी। गेडेस के नगरीय विकास संबंधी सिफारिशे लोक नियोजन के लोकाचार पर आधारित थीं स्थान के नियोजन पर नहीं। इसे नगर विकास के सामाजिक तथा मानवीय पक्षों की ओर ध्यान आकर्षित किया था जिससे विस्तृत नियोजन नीति का निर्माण किया जा सके।

किसी शहर की किसी गंदी बस्ती का निरीक्षण करे तथा उस बस्ती में रहने वाले व्यक्तियों से उनके व्यवसाय, स्वास्थ्य, आर्थिक दशा आदि पर बातचीत करके उनकी स्थिति को जान सकते है।इसके आधार पर गंदी बस्ती पर एक पृष्ठ की एक टिप्पणी तैयार कर सकते हैं।

पैट्रिक के कार्य ने अनेक विद्वानों को शैक्षणिक दृष्टि से भारतीय नगरों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। 1950 में भारतीय नगरीय अध्ययन में उस समय एक नई लहर उत्पन्न हुई जब घूरये, के. एन. वेंकटरप्पा, ए. आर. देसाई, एस. एस. झा, के. एम. कपाड़िया तथा रजोवर्ग जैसे भारतीय विचारकों ने नगरीय समस्याओं में बढ़ चढ़ कर रुचि ली। उन्होंने भारतीय समाजों में नगरीकरण के बाद आए संरचनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण किया। उन्होंने इन परिवर्तनों का व्यापक अध्ययन किया और नातेदारी आधारित संबंधा, परिवारों के छोटे होते स्वरूपो, श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी, विवाह के मामले में बदलती लैंगिक भूमिकाओं, नगरोय स्थलों में बढ़ती असमानता, आप्रवासी मजदूरों के नगरों की ओर उमड़ती भीड़, गंदी बस्तियों की बसावट, संयुक्त परिवारों के विघटन, विकास तथा निवास स्थान परिवर्तन, वर्ग विशेष के लोगों की बस्तियों के निर्माता, स्थानिक अलगाव, शहरों में जनसंख्या का बढ़ना, व्यक्तिवादी विचारधाराओं का विस्तार, गतिशीलता और उदारता की भावना का विस्तार आदि विषयों के व्यापक अध्ययन में आगे बढ़ कर रुचि ली। इसके अलावा सरकारी प्रयासों जैसे जनसंख्या के आंकड़ों का प्रकाशन तथा राष्ट्रीय सर्वेक्षणों की स्थापना ने भारतीय में नगरीय अध्ययन को प्रोत्साहन दिया ।

## नगरीय समाजशास्त्र की संभावनाएं

नगरीयकरण में अनंत संभावनाएं सन्निहित है। संबंधों के स्वरूप में बदलाव सामाजिक धारणाओं, मूल्य प्रणालियों, आर्थिक संरचनाओं, संस्कृति तथा जनसांख्यिकी में आने वाले बदलावों ने अनेक सवाल उठाये।

नगरीय क्षेत्र में अनेक घटक शामिल हैं जैसे नगर निवासी सेवाएँ प्रदान करने वाले संस्थान, आप्रवासी, प्रशासन आदि नगरीय केंद्र इन सभी घटकों के बीच अंतर्सम्बंधों के स्थल हैं। नगरों के प्रति उनके दृष्टिकोण भिन्न–भिन्न हो सकते हैं जिनके कारण

टकरावों व मतभेदों की स्थिति उत्पन्न हा जाती है। नगरीय समाजशास्त्री नगरीय स्थलों में घटित होने वाले अंतर्संबंधों को अपनी–अपनी सुविधानुसार अलग दृष्टि से देखते हैं। इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, उत्कृष्ट कोटि का साहित्य (लिखित विवरण) तथा सर्वेक्षण, इसकी प्रमुख सैद्धांतिक परम्पराओं को समझने में मदद कर सकते हैं।

उदारहण के लिए कार्ल मार्क्स के प्रलेख जैसे हार्वे एण्ड स्टेल्स ने नगरीय स्थलों में अस्तित्व में आने वाले टकरावों, अलगावों तथा असमानताओं के बारे में बताया हैं। इससे ऐसा लगेगा कि नगरीय स्थलों में गरीबों के समूह निवास करते हैं जो भेद–भावों से भरे है, तथा जिनके प्रति भेद–भाव किया जाता है जाति, नस्ल, लिंग तथा वर्ग आधारित विभाजन गांवों की तरह ही नगरों में भी विद्यमान रहते हैं। उदाहरण के लिये निखिल आनन्द का मुम्बई नगर की जल आपूर्ति के सर्वेक्षण का अध्ययन करने से पता लगता है कि वहां का नगर जल विभाग जल वितरण संबंधी सार्वजनिक सेवाओं में भी भेदभाव करता है। नगर के उच्चवर्गीय निवासियों के ठीक विपरीत मुम्बई की मुस्लिम आबादी को पर्याप्त जल वितरण नहीं किया जाता, इन लोगों को महानगर परिषद से सदैव इस बात की शिकायत रहती है कि इन्हें टोंटियों से मिलने वाला पानी लगातर मिल पायेगा या नहीं। सामाजिक राजनीतिक संबंधों की जटिल संरचना नगर में रहने वाले इन लोगों के प्रयासों का असर कभी–कभी ही हो जाता है और उसके परिणामस्वरूप महानगरपरिषद तक यह बात पहुंच पाती है। लेकिन लुइस वर्थ जैसे विद्वान इसे मार्क्सवादियों की भेदभाव पूर्ण सोच ही मानते हैं। साम्यवादी लोगों को नगर भेद–भावों से भरे लगते हैं।

दूसरी ओर उत्कृष्ट संरचनावादियों के विचार में नगरीय स्थल नगर में रहने वाले सभी लोगों के लिये उपयोगी तथा व्यावहारिक हैं। नगरों में विकास और समृद्धि की अनेक संभावनायें होती हैं । यही कारण है कि लोग ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़ कर शहरी क्षेत्रों में आते हैं, वहां आकर शिक्षा प्राप्त करते हैं उच्च वेतन वाली नौकरियां प्राप्त करते हैं और रोजगार के अवसर प्राप्त करते हैं।

नगरीय स्थलों में होने वाले प्रत्येक कार्य तथा अंतसंबंध के पीछे कोई न कोई कारण होता है जिसे विभिन्न परम्पराओं के संबंध में समझा जा सकता है। समाजशास्त्र के विद्यार्थी के नाते यह सलाह दी जाती है कि विवेकापूर्ण मस्तिष्क का विकास करिये

और अंतर्संबंधों को विसंगतियों को चीरते हुए प्रगति करिय। किसी भी सामाजिक परिदृश्य को संरचनात्मक घटकों तथा सांस्कृतिक संस्थानों की दृष्टि से देखना चाहिये। ऐसा करने से चीजें तथा उनसे जुड़े कारण साफ–साफ समझ में आयेंगे, अन्यथा सच्चाई को समझने में असमर्थ रहेंगे।

## सारांश

यद्यपि नगरीकरण युगों से अस्तित्व में है, परन्तु जिस युग में हम हैं, उसमें नगरीकरण अभूतपूर्व ढंग से घटित हो रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में नगरीकरण की रफ्तार अलग–अलग है । परन्तु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों से लोग तेजी से नगरों की ओर पलायन कर रहे हैं। 2001 और 2011 के बीच भारत में नगरीय आबादी में 90 मिलियन वृद्धि हुई। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि नगरीय आबादी में 31.8 प्रतिशत वृद्धि हुई। अधिकतर देश आजकल अपने नगरों के बारे में अध्ययन कर रह हैं और नगर में रहने वाले लोगों के जीवन को बेहतर बनाने पर जोर दे रहे हैं। इसलिए इस अध्ययन में नगरीकरण तथा उससे जुड़ी विभिन्न अवधारणाओं से शोधाथियों को अवगत कराना आव"यक हैं।

सदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1.आनन्द,निखिल. ''प्रेसरः दा पोलीटेक्निकस ऑफ वाटर सप्लाई इन मुम्बई'' कल्चरल एन्थ्रोपोलोजी (विले ऑनलाइन लाइब्रेरी) 26 नं.4 (2011) पृ.सं. 542–564

2. एण्डरसन, नेल्स. ''अरबानीज्म एण्ड अरबानाइजे"ान'' अमेरिकन जर्नल ऑफ सो"ायोलॉजी दा यूनिवर्सिटी ऑफ ि"ाकांगो प्रेस 65 नं.4 (1959) पृ.सं. 68–73

3. बील्स, राल्फ, एल.'' अरबानिज्म, अरबानाइजे"ान एण्ड एकुल्टरे"ान'' अमेरिकन एथ्रोपोलोजिस्ट 53 नं.1 (1951) पृ.सं. 1–10

4. कैसटल्स, मेनुल.'' दा अरबन क्यू"ाचन कैम्ब्रीज एमआइटी प्रेस 1977

5. गुहा, रामचन्द्र.'' प्रीहिस्ट्री ऑफ इंडियन एनवायरनमेन्टलिज्मः इन्टलेक्चुअल ट्रेडिसनस'' इकोनोमिक एण्ड पोलीटिकल वीकली 1992 पृ.सं. 57–64

6. हॉल, पीटर.'' सिटीज ऑफ टूमारोः एन इन्टेलेक्चुअल हिस्ट्री ऑफ अरबन प्लानिंग एण्ड डिजाइन सीन्स 1880 ऑक्सफोर्ड ब्लेकवेल पब्लिसरस 2002